“गीताश्री के कथा–साहित्य में नारी चेतना का बदलता स्वरूप”

राँची विश्वविद्यालय, राँची की पीएच.डी. हिन्दी उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध–प्रबंध की रूपरेखा

वर्ष–2024

मानविकी संकाय

शोध निर्देशिका

डॉ० सुनीता कुमारी
सहायक प्राध्यापिका,
विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग,
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधार्थी

रश्मि सिंह
(नेट उत्तीर्ण)
हिन्दी विभाग,
राँची विश्वविद्यालय, राँची

विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग,

राँची विश्वविद्यालय, राँचो

“गीताश्री के कथा–साहित्य में नारी चेतना का बदलता स्वरूप”

- ❖ प्रस्तावना
- ❖ साहित्य समीक्षा
- ❖ समस्या कथन
- ❖ शोध अध्ययन के उद्देश्य
- ❖ शोध विषय की प्रासंगिकता
- ❖ शोध विषय की प्रेरणा
- ❖ अध्ययन के संभावित परिणाम (परिकल्पना)
- ❖ सामग्री संकलन
- ❖ शोध प्रविधि
- ❖ शोध का महत्व
- ❖ प्रस्तावित शोध कार्य का प्रारूप
- ❖ उपसंहार
- ❖ परिशिष्ट

"गीताश्री के कथा–साहित्य में नारी चेतना का बदलता स्वरूप"

प्रस्तावना :

नारी चेतना का अभिप्राय नारी के अपने अस्तित्व बोध से है। सरल शब्दों में चेतना का अर्थ है– चैतन्य, संज्ञा, ज्ञान, जागरण, जागरूकता ,जागृति सचेत होना इत्यादि। नारी चेतना से अभिप्राय है कि नारी वर्ग आज अपने साथ होने वाले भेदभाव, अत्याचार एवं शोषण को भली–भाँति समझती है। वह उन रूढ़ीवादी परम्पराओं, विचारों एवं कुरुतियों को नकारती है और उन्हें पीछे छोड़कर एक नई ऊर्जा एवं आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ती है। वह अपने जीवन को एक सुनहरा अवसर प्रदान करती है जिससे वह स्वयं भी उन्नत एवं खुशहाल बनती है एवं समाज को भी एक नई राह दिखाती है।

गीताश्री का कथा साहित्य विस्तृत एवं व्यापक है। उनकी कहानियों में जहाँ एक ओर ग्रामीण एवं कस्बाई समाज का चित्रण मिलता है, वहीं महानगरीय जीवन की भी बहुत ही सशक्त अभिव्यक्ति मिलती है। उनकी रचनाओं में नारी मुक्ति की धमक साफ सुनाई देती है। गीताश्री ने अपने उपन्यासों में ऐतिहासिक एवं पौराणिक नारी पात्रों को प्रमुखता से स्थान दी हैं। इन्होंने अपने उपन्यासों में लोक कथाओं एवं लोक प्रचलित गीतों के माध्यम से नारी पात्रों को अपने साहित्य लेखन में स्थान दी हैं। "सामा चकवा" उपन्यास में नारी पात्र सामा की विजय की गाथा प्रस्तुत किया गया है। "वाया मीडियाः एक रोमिंग कॉरस्पॉडेंट की डायरी" उपन्यास में पत्रकारिता में कार्यरत महानगर की स्त्रियों का संघर्ष, चुनौतियाँ एवं अवरोधों को दर्शाया गया है। "अम्बपाली–एक उत्तरगाथा" उपन्यास में लेखिका ने अम्बपाली के माध्यम से आधुनिक नारी–चेतना को और अधिक सशक्तता प्रदान की हैं। गीताश्री ने "राजनटनी" उपन्यास में बारहवीं सदी के बंग राजा बल्लाल सेन तथा मिथिला की राजनर्तकी मीनाक्षी की प्रेमकथा के द्वारा मीनाक्षी के देश प्रेम की सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान की है। वह इस ओर ध्यान आकर्षित करती हैं कि जब बात देश की सुरक्षा की आती है तो मीनाक्षी के लिए प्रेम महत्वपूर्ण नहीं रहा जाता है बल्कि उसके लिए मिथिला का गौरव, उसका मान–सम्मान सर्वोपरि हो जाता है। वह मिथिला की रक्षा करती है। "कैद बाहर" उपन्यास में लेखिका ने स्त्री मुक्ति का चित्रण प्रमुखता से किया है। गीताश्री की

कथा साहित्य में उनकी बेबाकी और बुलंद आवाज़ साफ–साफ सुनाई देती है। उनकी कहानी कई वर्गों के संघर्ष, जीवन शैली और संकल्प को दिखाती है। गीताश्री उन चुनिंदा लेखिकाओं में शामिल हैं जिनकी कहानियों का अपना एक अलग पहचान है। "लिट्टी–चोखा और अन्य कहानियाँ" में ग्रामीण बोली वाणी की रस गंध आती है जिसमें स्थानीय जीवन संदर्भों की छटा गहरे रूप से रचा–बसा है। इस संग्रह की कहानियों में कभी मिथिला के समृद्ध सामाजिकता की याद दिलाती है तो कभी विस्थापन की दर्द सुनाई पड़ती है। वहीं राजा बाबू और पमपम बाबू जैसे कलाकार को अपनी पहचान नहीं मिलती है। "लेडिज सर्कल" कहानी में ग्रामीण, कस्बाई स्त्रियों की वेबाकी एवं खुलेपन का चित्रण किया गया है। जहाँ कि जब स्त्रियाँ आपस में मिलती–बैठती हैं तो उनकी बातों में किसी प्रकार की परदेदारी नहीं होती बल्कि खुलकर हँसी मज़ाक किया करती हैं। उस समय वह उन्मुक्त और पूरी तरह से स्वच्छंद महसूस करती है। "प्रार्थना के बाहर" कहानी संघर्षरत दो स्त्रियों की कहानी है जिन्हें जिंदगी अलग ही दिशा में ले जाती है। "मत्स्यगंधा" कहानी में मलाह दम्पति का चित्रण किया गया है। साथ ही करोना के कारण लोगों के रोज़ी–रोज़गार पर जो संकट आया था, उसका भी मार्मिक चित्रण इस कहानी में मिलती है। "मत्स्यगंधा" कहानी संग्रह में दस कहानियाँ संकलित है। इन सभी कहानियों की यह विशेषता है कि इसकी सभी कहानियाँ स्त्री मन की कहानियाँ है जो आधुनिक समाज के यथार्थ से टकराती है और भविष्य को नई राह दिखाती है।

साहित्य समीक्षा :

साहित्य समीक्षा अनुसंधान का महत्वपूर्ण अध्याय है। इसे अनुसंधान का आधार बिंदु भी कहा जाता है, क्योंकि यह समस्या चयन, उपकरण चयन, परिकल्पना निर्माण, अध्ययन अभिकल्प तथा समस्या परिभाषीकरण एवं परिसीमन में महत्वपूर्ण योगदान देता है। यह निष्कर्ष पर आधारित खंड है, जो शोधार्थी को ज्ञात से अज्ञात मार्ग की समस्याओं के समाधान का अवसर प्रदान करता है। अतः इस संदर्भ में साहित्य समीक्षा आवश्यक है। वर्तमान समय में गीताश्री हिन्दी साहित्य की एक चर्चित कथाकार है। वर्तमान समय में गीताश्री के साहित्य में

एक अनुसंधान कार्य नजर आए हैं जिस पर कार्य जारी है तथा कुछ पुस्तक समीक्षक प्रकाशित हुए हैं जो निम्न है :–

प्रस्तुत शोध विषय से पूर्व जारी कार्य :–

1. ″गीताश्री का कथा साहित्य : संवेदना और शिल्प″

   शोध छात्र – हेमलता पाल

   शोध निर्देशिका – प्रो शर्मिला सक्सेना

   दयालबाग एजुकेशन इंस्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय)

   दयालबाग, आगरा, 2022

पुस्तक समीक्षा :–

1. नीरज नीर (हंस, वर्ष 38, अंक 4 ,नवंबर 2023) द्वारा ISSN 2454–4450 में प्रकाशित पुस्तक समीक्षा गीताश्री के "मत्स्यगंधा" कहानी संग्रह पर प्रकाश डालते हैं कि इस संग्रह की कहानियों में मनोवैज्ञानिक स्तर पर स्त्रियों की भावनाओं, उनकी अस्मिता, उनके संघर्षों और उनके सामर्थ्य को प्रभावशाली तरीके से व्यक्त करती है।
2. डॉ. राशि सिन्हा (नारी अस्मिता, जून–जुलाई–अगस्त 2023) द्वारा गीताश्री के "अम्बपाली" एक उत्तर गाथा उपन्यास पर प्रकाश डालती हैं कि इस उपन्यास की नारी पात्र अम्बपाली पुरुषों द्वारा बुनी गई गई स्त्री विरोधी घटनाओं के आगे टूटती नहीं, बँटती नहीं बल्कि स्वयं को एक इकाई के रूप में जोड़े स्त्री सत्ता को विशिष्ट आयाम प्रदान करती है।
3. विभूति बी. झा(https:/www.bibhutibja.com/2020/10समीक्षा उपन्य/) द्वारा गीताश्री की "राजनटनी" उपन्यास पर प्रकाश डालते हैं कि इस उपन्यास में लेखिका ने सभी चरित्रों के साथ न्याय किया है। संवाद भी सीधे और सटीक है। पाठक पढ़ते समय मंत्रमुग्ध हो जाता है। प्रेम प्रसंग का वर्णन कालजयी है। स्त्री का कोमल हृदय अलग–अलग स्थितियों, भावों में सख्त निर्णय भी ले सकता है। इसे स्थापित करने में लेखिका पूर्णतः सफल हैं।
4. अभिषेक मुखर्जी (https:/www.Shabdankan.com/2023/07/review-of-qaid-bahar-geeta-shri.html) द्वारा ''कैद बाहर'' उपन्यास पर प्रकाश डालते हैं कि विभिन्न धर्म, जाति, भाषा और भिन्न–भिन्न सामाजिक और आर्थिक

स्तर की स्त्रियाँ इसमें अपना स्वतः स्फूर्त योगदान दे रही हैं। लेखिका ने इन सभी पक्षों को बहुत ही सुंदरता से एक माला के रूप में पिरोकर पाठक वृन्द को अर्पित किया है। सभी निज मुक्तिपथ पर अग्रसर हैं– माया, मल्विका, सिन्दुरी, सुनन्दा, शशांक की माँ–सबका मार्ग अलग है। अपनी तरह से सभी संघर्षरत है पिंजरे की क़ैद से बाहर निकलने के लिए। मार्ग भले ही भिन्न हो पर उद्देश्य सबका एक ही है– मुक्ति। यह उपन्यास जीवन जीने की कथा कहता है।

अतः शोध कार्य हेतु कथा साहित्य पर मेरे चयनित विषय "गीताश्री के कथा साहित्य में नारी चेतना का बदलता स्वरूप" पर अभी तक कोई शोध कार्य नहीं हुए हैं। मेरे द्वारा किया गया शोध कार्य मौलिक एवं नवीन होगा।

समस्या कथन :

सदियों से नारी की स्थिति दयनीय रही। उसे हमेशा दबाया एवं कुचला गया। पितृसत्तात्मक समाज में नारी को मात्र एक वस्तु बनाकर रखा गया। उसे हमेशा अपनी आवश्यकता के अनुरूप उसका उपयोग किया गया। कभी धर्म एवं आस्था के नाम देकर तो कभी परंपरा के नाम देकर। इस प्रकार समाज के दोहरे मानदण्ड के कारण स्त्री को हमेशा हाशिये पर रखा गया। सभी संबंधों में नारी की स्थिति अधीनस्थ की रही है। ऐसे में उसके मन में समाज के प्रति असंतोष है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य :

1. गीताश्री के कथा साहित्य का अध्ययन करना।
2. गीताश्री के कथा साहित्य में नारी चेतना के विविध पहलुओं का सूक्ष्म अध्ययन करना।
3. नारी वर्ग में रूढ़ियों, कुप्रथाओं का विरोध करने का चेतना जागृत करना।
4. नारी वर्ग को आत्मनिर्णय लेने की क्षमता विकसित करना एवं आत्मनिर्भर बनाना।

5. समाज में लैंगिक भेदभाव की खाई को समाप्त करना एवं समाज में नारी के प्रति सम्मान का भाव जागृत करना।

शोध विषय की प्रासंगिकता :

अब तक गीताश्री के साहित्यिक रचनाओं पर कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। इस शोध कार्य के द्वारा भविष्य में साहित्य के अनेक पहलुओं पर अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया जा सकेगा। नारी की स्थिति सदियों से दोयम दर्जे की रही है। आज भी नारी को हर जगह अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करना पड़ता है। गीता श्री के साहित्यिक रचनाओं में स्त्री स्वतंत्रता एवं स्त्री मुक्ति की स्वर साफ–साफ सुनाई देती है। अतः इस संदर्भ में मेरे शोध कार्य के विषय की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ जाती है।

शोध विषय की प्रेरणा :

"लिट्टी चोखा और अन्य कहानियाँ", "मत्स्यगंधा" कहानी संग्रह, "हसीनाबाद", "सामा–चकवा" उपन्यास पढ़ने के बाद गीता श्री के सशक्त नारी पात्रों से मैं बहुत प्रभावित हुई। उनकी नारी पात्र संघर्ष करती है और अपनी मंजिल को प्राप्त कर लेती है।

इस संदर्भ में मैंने अपनी शोध निर्देशिका डॉ० सुनीता कुमारी से विचार –विमर्श किया और उन्होंने भी मुझे उक्त विषय पर कार्य करने के लिए प्रेरित किया।

अतः मैंने शोध–निर्देशिका डॉ० सुनीता कुमारी की प्रेरणा एवं निर्देशन में "गीताश्री के कथा साहित्य में नारी चेतना का बदलता स्वरूप" विषय पर शोध कार्य करने का निश्चय किया।

अध्ययन के संभावित परिणाम (परिकल्पना) :

अध्ययन का संभावित परिणाम निम्न है :–

1. नारी वर्ग में धार्मिक रूढ़ियों और अंधविश्वासों के विरुद्ध समाजवादी चेतना का विकास हो सकेगा।
2. नारी वर्ग अपनी परंपरागत छवि से बाहर निकल सकेगी जो उसके समग्र विकास में बाधा उत्पन्न करता है।

3. समाज में लैंगिक भेदभाव को समाप्त किया जा सकेगा।

4. नारी वर्ग में आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता एवं आत्मनिर्णय की भावना का विकास होगा।

5. नारी वर्ग में अत्याचारी एवं शोषणकारी शक्तियों से लड़ने की भावना जागृत होगा।

सामग्री संकलन :

सर्वप्रथम विभिन्न पुस्तकालयों में जाकर शोध विषय से संबंधित पुस्तकों एवं पत्र–पत्रिकाओं का अध्ययन किया जाएगा तथा उन्हें संग्रह करने का प्रयास किया जाएगा। इस शोध से संबंधित रचनाओं तथा शोध ग्रंथ एवं कोश ग्रंथ आदि के प्रयोग द्वारा शोध कार्य की तथ्य परक सामग्री को एकत्रित किया जाएगा।

शोध प्रविधि :

सर्वप्रथम विभिन्न पुस्तकालयों में जाकर शोध विषय से संबंधित पुस्तकों का अध्ययन किया जाएगा तथा उन्हें संग्रह करने का प्रयास किया जाएगा। मेरे शोध विषय "गीताश्री के कथा साहित्य में नारी चेतना का बदलता स्वरूप" में अनुसंधान के विभिन्न विधियों में प्रमुखता वर्णनात्मक, तुलनात्मक, ऐतिहासिक, आलोचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक विधियों का प्रयोग में लाया जाएगा। शोध विषय से संबंधित आधार ग्रंथ, सहायक ग्रंथ, शब्दकोश, वृहत् सूक्ति कोश, हिंदी पर्यायवाची कोश, शोध पत्रों, पत्र–पत्रिकाएँ, दैनिक समाचार पत्रों, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया एवं इंटरनेट स्रोतों इत्यादि का भी उपयोग किया जाएगा। इसके अतिरिक्त कथाकार गीताश्री से मिलकर साक्षात्कार विधि से उनके विचारों को जानने का प्रयास किया जाएगा। यथा समय आवश्यकता के अनुरूप उसमें परिवर्तन भी किया जा सकता है।

शोध का महत्व :

गीताश्री हिन्दी साहित्य जगत् में चर्चित कथाकार हैं। गीताश्री ने अपनी कहानियों एवं उपन्यासों में आधी आबादी के प्रतिनिधित्व करने वाली नारी के संघर्ष, शोषण एवं उनकी समस्याओं को प्रमुखता से अपनी साहित्य में चित्रण किया है। वर्तमान समय में जहाँ लोगों के जीवन स्तर में सुधार हुआ है तो वहीं

दूसरी ओर तेजी से नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है। ऐसे में दिनों दिन नारी हिंसा, शोषण एवं उत्पीड़न की घटनाएं बढ़ती जा रही है।

गीताश्री ने अपने साहित्य में अनेक प्रकार के नारी पर बीती समस्याओं का चित्रण किया। गीताश्री अपने साहित्य के माध्यम से नारी सशक्तिकरण का कार्य किया है। वह नारी को आत्मनिर्भर एवं स्वंवलंबी बनने की प्रेरणा देती है। ऐसे में इस शोध का महत्व और अधिक बढ़ जाता है।

शोध प्रारूप

अध्ययन की सुविधा हेतु प्रस्तावित शोध विषय पर निम्न पारूप के अनुसार कार्य करने की योजना हैः–

प्रस्तावना :

1. प्रथम अध्याय :– गीताश्री का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1.1 गीताश्री का जीवन परिचय

1.2 गीताश्री का रचना–संसार

1.3 गीताश्री के पुरस्कार एवं सम्मान

2. द्वितीय अध्याय :– नारी चेतना : अर्थ, परिभाषा और स्वरूप

2.1 नारी–चेतना का अर्थ एवं परिभाषा

2.2 नारी चेतना के विकास में भारतीय नवजागरण की भूमिका

2.3 स्त्री मुक्ति आंदोलन

3. तृतीय अध्याय : समकालीन महिला लेखिकाओं के साहित्य में नारी चेतना

3.1 ममता कालिया

3.2 क्षमा शर्मा

3.3 तसलीमा नसरीन

3.4 मृदुला गर्ग

3.5 मैत्रेयी पुष्पा

3.6 नासिरा शर्मा

3.7 चित्रा मुद्गल

3.8 रजनी गुप्त

3.9 अल्पना मिश्रा

4. चतुर्थ अध्याय :–गीताश्री के कथा–साहित्य में नारी चेतना का बदलता स्वरूप

4.1 गीताश्री की कहानियों में नारी चेतना का बदलता स्वरूप

4.1.1 'प्रार्थना के बाहर और अन्य कहानियाँ' कहानी संग्रह में नारी चेतना का बदलता स्वरूप

4.1.2 'स्वप्न साजिश और स्त्री' कहानी संग्रह में नारी चेतना का बदलता स्वरूप

4.1.3 'डाउनलोड होते हैं सपने' कहानी संग्रह में नारी चेतना का बदलता स्वरूप

4.1.4 'लेडीज सर्कल' कहानी संग्रह में नारी चेतना का बदलता स्वरूप

4.1.5 'भूत–खेला' कहानी संग्रह में नारी चेतना का बदलता स्वरूप

4.1.6 'लिट्टी–चोखा और अन्य कहानियाँ' कहानी संग्रह में नारी चेतना का बदलता स्वरूप

4.1.7 'बलम कलकत्ता' कहानी संग्रह में नारी चेतना का बदलता स्वरूप

4.1.8 'मन बसंत तन जेठ' कहानी संग्रह में नारी चेतना का बदलता स्वरूप

4.1.9 ‘मत्स्यगंधा’ कहानी संग्रह में नारी चेतना का बदलता स्वरूप

4.2 गीताश्री के उपन्यासों में नारी चेतना का बदलता स्वरूप

4.2.1 ‘हसीनाबाद’ उपन्यास में नारी चेतना का बदलता स्वरूप

4.2.2 ‘राजनटनी’ उपन्यास में नारी चेतना का बदलता स्वरूप

4.2.3 ‘वाया मीडिया : एक रोमिंग कॉरस्पॉडेंट की डायरी’ उपन्यास में नारी चेतना का बदलता स्वरूप

4.2.4 ‘अम्बपाली’ उपन्यास में नारी चेतना का बदलता स्वरूप

4.2.5 ‘क़ैद–बाहर’ उपन्यास में नारी चेतना का बदलता स्वरूप

4.2.6 ‘सामा–चकवा’ उपन्यास में नारी चेतना का बदलता स्वरूप

5. पंचम अध्याय : गीताश्री के कथा–साहित्य : भाषा शैली एवं शिल्प विधान

5.1 कथा–साहित्य की संरचना तथा प्रवेश– चित्रण

5.2 भाषिक प्रयोग

5.3 शैलीगत विशिष्टय

उपसंहार

परिशिष्ट :

(क) आधार ग्रंथ

(ख) सहायक ग्रंथ

(ग) पत्र– पत्रिकाएं

(घ) कोश ग्रंथ

(ड़) वेबसाइट

(च) साक्षात्कार

नोट : आवश्यकता होने पर विषय सूची में आंशिक परिवर्तन किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

(क) आधार ग्रंथ :–

कहानी

1. गीताश्री, 'प्रार्थना के बाहर और अन्य कहानियाँ', वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2013
2. गीताश्री, 'स्वप्न साजिश और स्त्री', सामायिक प्रकाशन', नई दिल्ली, 2015
3. गीताश्री, 'डाउनलोड होते हैं सपने', शिल्पायान प्रकाशन, नई दिल्ली, 2017
4. गीताश्री, 'लेडिज सर्कल', राजपाल एण्ड सन्ज़ प्रकाशन, दिल्ली, 2018
5. गीताश्री, 'भूत–खेला', वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2019
6. गीताश्री, 'बलम कलकत्ता' प्रलेक प्रकाशन, मुंबई, 2021
7. गीताश्री, 'मन बसंत तन जेठ', वनिका, प्रकाशन, बिजनौर, 2021
8. गीताश्री, 'लिट्टी–चोखा और अन्य कहानियाँ', राजपाल एण्ड सन्ज़ प्रकाशन, दिल्ली, 2022
9. गीताश्री, 'मत्स्यगंधा', शिवना प्रकाशन, सीहोर, 2022

उपन्यास

1. गीताश्री, 'हसीनाबाद', वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2017
2. गीताश्री, 'राजनटनी', राजपाल एण्ड सन्ज़ प्रकाशन, दिल्ली, 2020
3. गीताश्री, 'वाया मीडिया : एक रोमिंग कॉरस्पॉडेंट की डायरी', वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2020
4. गीताश्री, 'अम्बपाली', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2022

5. गीताश्री, 'क़ैद बाहर', वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2023
6. गीताश्री, 'सामा–चकवा', राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली, 2024

(ख) सहायक ग्रंथ :

सहायक ग्रंथ :–

1. राव, नागरत्ना, 'हिन्दी साहित्य और नारी समाज', लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, प्रथम संस्करण, 2019
2. आर्य, डॉ० भारती, 'स्मृतियों में नारी', विश्वभारती अनुसन्धान परिषद, ज्ञानपुर (भदोही), तृतीय संस्करण, 2020
3. सुजाता, 'स्त्री निर्मिति', सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2019
4. व्होरा, आशारानी, 'नारी–शोषण आईने और आयाम', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली,1994
5. तिवारी, डॉ० रामचन्द्र, 'हिन्दी का गद्य–साहित्य,' विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, तेरहवाँ संस्करण, 2020
6. शुक्ल, आचार्य रामचन्द्र, 'हिंदी साहित्य का इतिहास', राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली, संस्करण, 2023
7. खान, उषाकिरण, 'मैं एक बलुआ प्रस्तर खंड,' राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली, पहला संस्करण, 2021
8. पालीवाल, कृष्णदत्त (संपा.), 'नारी–विमर्श की भारतीय परंपरा', सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2014.
9. अनामिका, 'स्त्री विमर्श की उत्तर–गाथा', सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, दूसरा संस्करण, 2017
10. मेनन, निवेदिता, 'नारीवादी निगाह से', अनु. नरेश गोस्वामी, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. नई दिल्ली, पहला संस्करण, 2021
11. सिंह, नमिता, 'स्त्री–प्रश्न' वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2017

12. पाण्डेय, डॉ० वीणा, 'नारी चेतनाः एक ऐतिहासिक अध्ययन', इंस्टिट्यूट फॉर सोशल डेवलपमेंट एण्ड रिसर्च, राँची, प्रथम संस्करण, 2019.

13. गुप्त, प्रो० राम गोपाल, 'मनुस्मृति और आधुनिक समाज, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2018

14. गुप्ता, रमणिका, 'स्त्री विमर्श कलम और कुदाल के बहाने', ज्योतिलोक प्रकाशन, दिल्ली, 2007

15. मालती, डॉ० के० एम०, 'स्त्री विमर्शः भारतीय परिप्रेक्ष्य', वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2017

16. त्रिपाठी, राधावल्लभ, 'बहस में स्त्री', सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2014

17. वर्मा, महादेवी, 'श्रृंखला की कड़ियाँ', लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, पंचम संस्करण, 2019

18. पाण्डे, मृणाल, 'परिधि पर स्त्री', राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, पहला संस्करण, 2017

19. बोउवार, सीमोन द्, 'स्त्री : उपेक्षिता', अनु. प्रभा खेतान, सरस्वती विहार, दिल्ली, दूसरा संस्करण, 1991

20. नगेन्द्र, डॉ०, डॉ० हरदयाल (संपा.),'हिंदी साहित्य का इतिहास', मयूर बुक्स, नयी दिल्ली, 75वां संस्करण 2021

21. सुजाता, 'दुनिया में औरत', राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली, पहला संस्करण, 2022

22. गर्ग, डॉ० संजय, सुशील कुमार (संपा.), 'स्त्री विमर्श का कालजयी इतिहास', सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2021

23. यादव, राजेन्द्र, प्रभा खेतान, अभयकुमार दुबे (संपा.), 'पितृसत्ता के नए रूप', राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, दूसरा संस्करण, 2019

24. पी., प्रमीला के., 'स्त्री–अध्ययन की बुनियादी', राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., नई दिल्ली, पहला संस्करण, 2015

25. कनक, 'स्त्रीशब्द', किरण, राँची, 2022

26. कस्तवार, रेखा, 'स्त्री चिन्तन की चुनौतियाँ', राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., नई दिल्ली, दूसरा संस्करण, 2010

27. गुप्ता, रमणिका, 'स्त्री मुक्ति संघर्ष और इतिहास', सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2017

28. कालिया, ममता, 'भविष्य का स्त्री विमर्श', वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2017

29. प्रकाश, अलका, 'नारी चेतना के आयाम', लोकभारती, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण. 2007

30. त्रिपाठी, कुसुम (संपा.) 'अलगनी पर औरते', अगोरा प्रकाशन, वाराणसी, प्रथम संस्करण 2020

(ग) **कोश–ग्रंथ** :–

1. सिंह, पुष्पपाल, 'राजकमल बृहत हिन्दी शब्दकोश', राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. , नई दिल्ली, पहला संस्करण, 2017

2. वर्मा, डॉ० श्याम बहादुर, डॉ० धर्मेन्द्र वर्मा (संपा.), 'प्रभात बृहत् हिन्दी शब्द कोश (खण्ड–1)', प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2010

3. वर्मा, डॉ० श्याम बहादुर, डा० धर्मेन्द्र वर्मा (संपा.), 'प्रभात वृहत् हिन्दी शब्दकोश (खण्ड–2)', प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2010

4. तिवारी, डॉ० भोलानाथ, 'हिन्दी पर्यायवाची कोशी', प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2019

(घ) पत्र–पत्रिकाएँ :–

1. वागर्थ

2. साहित्य अमृत

3. हंस

4. आजकल

5. नारी अस्मिता

(ड़) वेबसाइट :–

1. https:/www.bibhutibja.com/2020/10समीक्षा राजनटनी उपन्य

2. https:/www.Shabdankan.com/2023/07/review of qaid-bahar-geeta-shri.html